

प्रथम संस्करण : अपनुबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मृद्वण : दिसंबर 2009 पीष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2008

PD 10T NSY

प्स्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - कृतिका एस. नरुला

संग्जा तथा आवरण - निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑयरेटर - अर्चना गुप्ता, अंशल गुप्ता

आभार जापन

प्रोफेसर कृष्ण लुमार, निरंशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, न्हें दिल्ली; प्रोफेसर कपुधा कामथ, संयुक्त निरंशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोबंगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर के, के, विशय, विभागाध्यक्ष, प्रारोधक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर रागजन्म कर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, विदिध देवलीपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

त्री अश्वेक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपित, महस्था गांधी अंतर्राष्ट्रीय सिदी विश्वविद्यालय, वर्धी; प्रोक्रसर फरीदा, अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीहर, हिंदी विधाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुवहत हसन, निर्देशक, नेशनल चुक इस्ट, वई दिल्ली; श्री ग्रेडित धनकर, निर्देशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी एस एम. पंपर पर मृद्रित

प्रकारात विभाग में स्वीवय, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रतिश्वण चरिक्द, औ अर्थायन्द मार्ग, नर्द दिल्ली 110016 हारा प्रकाशिया तथा पंकाब प्रिटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल खरिया, सहट-ए, मधुरा 281004 हारा मुहित। ISBN 978-81-7450-898-0 (बस्झा-सेट) 978-81-7450-881-2

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशों के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती है, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रमुर मात्रा में किताबें मिला। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यच्यां के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सके।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकारक को पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किन्छे बाग को क्षपना तथा इतेन्द्रिक्ती, मशीनी, फोटोप्रतिनिष, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुरु; प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रस्तरण वर्षित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एक.मी.इं.कर.टो. कैपम. श्री आर्थिद मार्ग, अधे दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फीट रॉड, हेली एक्सटेंगन, डोम्डंबेर, बन्डशंकरी III स्टेब, बंगसूब 500 085 प्रतेष : 080-20725740
- नकवीयन ट्रस्ट असन, वाबच्य जनवीयन, जसमराबाद 380 014 चील : 079-27541446
- मी.डब्प्यू श्री. केपम, रिकट: पंगकल यस स्तीप प्रिमाती, कोलकात 700 114
 भीन : 033-25530454
- ग्री.शक्षकृत्ये, कॉम्प्लेक्स, मालीगाँच, नुवाहाटी १४। ०२। प्रदेश : ०३६१-३६१-४६१०

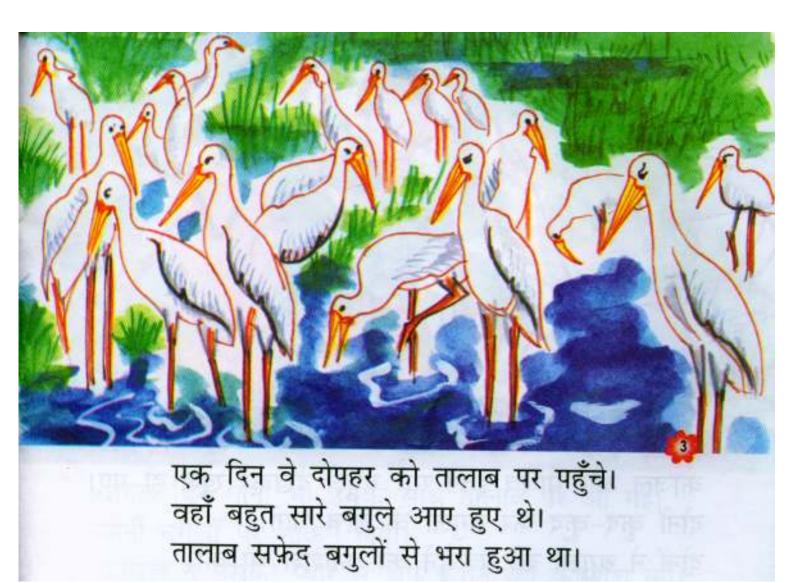
प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजाकुमार मुख्य संपादक : राजेश उप्पात मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार मुख्य व्यापार अधिकारी : गीवम गांगुली





काजल और माधव के गाँव में एक तालाब था। दोनों तालाब पर रोज़ खेलने जाते थे। उन्हें तालाब का पानी बहुत अच्छा लगता था।





काजल और माधव इतने सारे बगुले देखकर खुश हो गए। दोनों कूद-कूद कर बगुलों के बीच भागे। दोनों ने बगुलों को पकड़ने की कोशिश भी की।



अगले दिन मोनी भी उनके साथ तालाब पर आ गई। मोनी बगुलों पर भौंकने लगी। काजल ने उसको प्यार से चुप कराने की कोशिश की।





माधव और काजल उसको घर छोड़ने चल दिए। तालाब के उस तरफ़ उन्हें कुछ घोंसले दिखे। बगुलों ने तालाब के किनारे के पेड़ों पर घोंसले बनाए थे।







थोड़े दिनों बाद कुछ अंडों का रंग मटमैला हो गया। उनमें से छोटे-छोटे बगुले निकल आए। छोटे बगुले आवाज निकालते और पंख फड़फड़ाते थे।



काजल और माधव को यह देखने में मज़ा आता था।



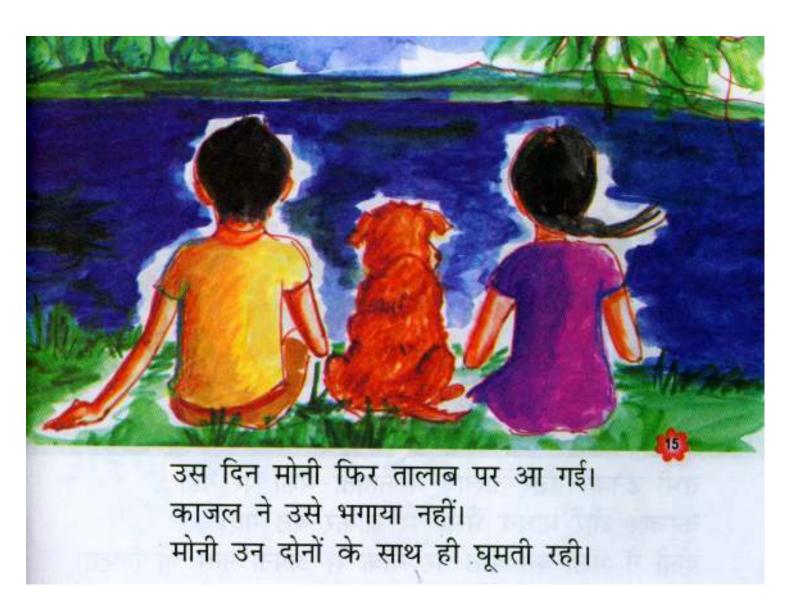
छोटे बगुले अब घोंसलों से बाहर भी आते थे। तालाब के किनारे खूब सारे छोटे-छोटे बगुले दिखने लगे। काजल और माधव छोटे बगुलों के पीछे भागते।



धीरे-धीरे छोटे बगुले बड़े होने लगे। वे बड़े बगुलों के साथ तालाब में भी बैठने लगे। वे तालाब में मछली और मेंढ़क भी पकड़ने लगे थे।



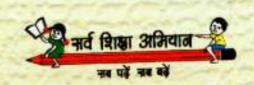
एक दिन सारे बगुले वापस अपने घर चले गए। काजल और माधव ने सबको उड़कर जाते हुए देखा। उन्हें पता था कि बगुले अगले साल फिर आएँगे।





तभी उनकी नज़र तालाब में नहाती भैंसों पर गई। काजल और माधव भैंसों पर जाकर बैठ गए। दोनों ने भैंसों की पीठ पर चॉक से अपना नाम भी लिखा।







₹. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

> ISBN 978-81-7450-898-0 (बाखा-सैट) 978-81-7450-881-2